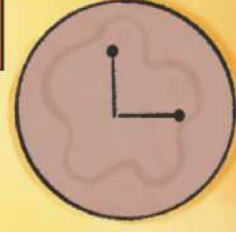


माँ की अलमारी



माँ दिखलाओ, अपनी अलमारी,
देखें कितनी हैं, उसमें साड़ी!

माँ बोली— है भरा खज़ाना,
गिनकर तुम मुझको बतलाना।

साड़ियों का भरा भंडार,
एक, दो, तीन, चार।

पाँच, छह, सात, आठ,
उस गठरी की भी खोलो गाँठ!

खोली गठरी मिल गई साड़ी,
गिन ली उनमें से भी सारी!

नौ, दस और अब बस,
बस, बस! ये हैं कुल दस।

हँसकर तब बोली माँ प्यारी,
छान ली अम्मा की अलमारी!



मकड़ी की आँखें

मकड़ी रोई, मकड़ी रोई,
उसकी बात समझे ना कोई,
चिड़िया और गिलहरी साथ,
मकड़ी कर रही थी बाता।

बोली गिलहरी, मेरी आँखें हैं दो,
चिड़िया बोली, मेरी भी दो,
मकड़ी बोली, मेरी आठ,
हँसे गिलहरी-चिड़िया साथ।

यह देख मकड़ी झल्लाई,
सबको फिर यह बात बताई,
आँखें हैं मेरी आठ,
इसमें हँसने की क्या बात!

दोनों आँखों से मैं देखूँ,
आगे-पीछे, इधर-उधर,
बाकी आँखें सिग्नल देतीं,
होता कहीं खतरा अगर।

गिलहरी-चिड़िया थे हैरान,
आज मिला उनको यह ज्ञान,
मकड़ी की होतीं आँखें आठ,
समझ आ गई अब यह बात?

मकड़ी भी फिर मुस्कुराई,
ज़ोर से ताली बजाई,
मुझमें है यह बात निराली,
मैं हूँ 'आठ आँखों' वाली।

मस्त कलंदर

एक पेड़ पर, था एक बंदर,
नाम था उसका मस्त कलंदर।
उछल-कूद था खूब मचाता,
धमा-चौकड़ी उसे था भाता।

एक दिन पाई एक टोपी,
लाल-लाल प्यारी-सी टोपी।
सिर पर पहनी उसने टोपी,
राजा बना मैं पहन के टोपी।

राजा बनना था एक सपना,
अकड़ के मुझको अब है चलना।
सोच कलंदर चला अकड़ के,
बात करो ना कोई मुझसे।

आँखें ऊपर, पैर बढ़ाया,
पैर के नीचे गड्ढा आया।
कीचड़ में गिर गया कलंदर,
अब न रहा राजा वह बंदर।

